संस्मरण

नाग पीछा कर रहे हैं

❑ शरण कुमार लिंबाले

अनुवाद : निशिकांत ठकार

स्कूल बच्चों के नैसर्गिक गुणों को विकसित करने में मदद करता है । स्कूली जीवन में बच्चे धर्म, नस्ल और जाति के भेद भूल जाते हैं । किन्तु समाज में स्कूल की एक सीमित भूमिका है । बाहर के समाज की सदियों से गहरी खाइयों को पाटने में अकेला स्कूल समर्थ नहीं हो सकता। ये संस्मरण स्कूल की सीमा नहीं बल्कि संभावना बताता है । तो समाज की विद्रूपता को भी उद्घाटित करता है ।

मेरे बापू का नाम है - विलास सिद्रामप्पा पाटील ।

हमारे घर में कोंडिबा नाम का एक महार था । वह हमारे घर का महार था । कोंडया मेरे बापू की खातिर कुछ भी करने को तैयार रहता था। हमारे खानदान में कोंड्या को ही नहीं, उसकी पिछली सत्रह पीढ़ियों को पालतू जानवरों की तरह पाला हुआ था। कोंड्या महार भी कुत्ते-बिल्ली जैसा पालतू जानवर ही था । वह बापू की मालिश करता, उनके हाथ पैर दबा देता बापू के बाहर से लौटने पर उनके पैर धोता घर के लिए बाजार हाट जाना, खेती की देखभाल करना, मजदूरों को वेतन देना आदि काम वही करता था। बापू को वह अण्णा कहता था। कोंड्या की जोरू केरा, हमारे घर के गोठ में काम करती थी । वही खेती के कामों के लिए औरतों को ले आती थी ।

बापू के विधायक बनने के बाद कोंड्या महार उनका 'पी.ए.' बन गया। क्या महार और क्या पी. ए., काम तो एक ही था। पी.ए. बनने के बाद कोंड्या महार के काम बढ़ गये थे । उसके बदन पर खादी के कपड़े आ गये थे । कोंड्या बापू का पी.ए., बॉडीगार्ड और चेला भी था। बापू के पीछे-पीछे चलना, उनके लिए नारे लगाना-लगवाना जैसे काम वही करता था। इसलिए बापू उससे बहुत खुश रहते थे ।

मेरे दादाजी पुरातनपंथी थे । भेदभाव करते-मानते थे, प्रवृत्ति से धार्मिक और कठोर अनुशासनप्रिय थे । महारों को सिर पर नहीं बैठाना चाहिए, नौकरों को जूते की नोंक पर रखना चाहिए । यह उनका निश्चित मत था। बचपन की एक बात मुझे अब भी याद आती है : मुझे प्यास लगी थी आसपास कोई नहीं था । कुएं तक जाकर पानी पी आना मेरी जान पर आ गया था मैंने कोंड्या महार को पुकारा और कुएं से पानी लाने के लिए कहा। मगर वह पानी लाने को तैयार नहीं था। किसी ने देख लिया तो गजब हो जायेगा, इस विचार से वह कुएं के पास जाने में आनाकानी कर रहा था । मैं भी जिद पकड़कर बैठ गया । आखिर कोंड्या पानी लाने के लिए कुएं में उतर गया । मैं पहरा दे रहा था, इतने में न जाने कहां से दादाजी वहां आ गये।

दादाजी ने कोंड्या महार को कुएं में उतरते हुए देख लिया था। मैं वहां से भाग गया, दादाजी ने कोंडया को जूतों से खूब पीटा, उसने कुआं भ्रष्ट कर दिया था महार यदि कुएं को भ्रष्ट कर देता है तो खेतों से लक्ष्मी रूठ जाती है । महार अमंगल होता है। कोंडया चीख रहा था । कह रहा था ''छोटे मालिक ने कहा था। इस पर दादाजी और आग बबूला हो गयो, छोटा मालिक अगर गू खाने के लिए कहेगा, तो खायेगा तू? अरे तू तो महार है न, अपनी जात को भूल गया तू ? तुझे मस्ती चढ़ गयी है ?''

कोंड्या महार का बेटा दौल्या मेरा दोस्त था। हम दोनों ने एक साथ सातवीं कक्षा पास की थी । सातवीं के बाद हाई स्कूल के लिए हमें गांव से दो मील दूर जाना पडता था। इस हाई स्कूल की स्थापना मेरी दादी के नाम पर हुई थी। आसपास के पांच गांवों के लड़के यहां आकर पढ़ते थे । सुंदर बगीचा, आलीशान इमारत, लंबा-चौड़ा क्रीड़ागन, इन सबमें मन रम जाता था । पांच गांवों के लड़के आते थे, इसलिए माहौल मेल जोल का होता था । मैं और दौल्या साथ साथ स्कूल जाते थे । रास्ते में अंदाप्पा का कुंआ पड़ता था, वहां बैठकर हम दोनों भोजन करते । दौल्या की चटणी मुझे बहुत पसंद थी। चटणी बहुत तेज हुआ करती थी। मैं दौल्या की चटणी खाता और दौल्या मेरी सब्जी खाता, आते जाते वक्त दौल्या ही मेरे बस्ते का बोझ उठाता । कभी कभी दौल्या के साथ मेरा झगड़ा भी हो जाता था । तब वह मुझे धमकी देता, ''गांव में जाकर सबसे कह दूंगा कि तू हमारी चटणी खाता है ।'' तब में बिल्कुल ठंडा पड जाता था - अगर लोगों को पता चल गया कि मैं महार के हाथ की चटणी खाता हूं तो बदनामी होगी । इस बात से मैं बहुत डरता था।

एक बार मेरा और दौल्या का जोरदार झगड़ा हो गया । मैं ने दौल्या को नीचे पटककर बहुत पीटा । उस दिन हम दोनों का स्कूल का नागा हो गया ।

मैं तेरे घर जाकर बता दूंगा कि तूने मेरी चटणी खायी थी । दौल्या बोला, कह देना, कह देना क्या होगा ? तू भी तो इंसान है। मैं ने कहा । महार की चटणी खाकर पटेल भ्रष्ट हो गया जी । दौल्या बोल पड़ा ।

शाम को घर जाकर दौल्या ने बता दिया कि मैं उसकी चटणी खाता हूं और न देने पर उससे मारपीट करता हूं । जैसा कि अपेक्षित था, दादाजी ने मेरी पिटाई की।

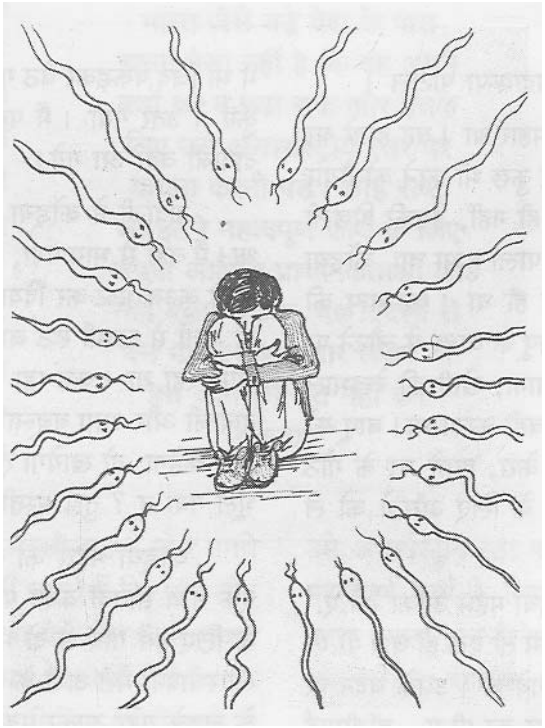

शाम को मां ने मुझे अपने पास बुलाया । उस दिन मैंने खाना खाने से इंकार कर दिया था, मां मुझे समझाने लगी , हम लोग पांच गांव के पटेल हैं। महार की जात नीच होती है, ये तो अपने नौकर है। महार मरे हुए जानवरों को खाते हैं इसलिए हमें उनके हाथ की चीज नहीं खानी चाहिये । तुझे चटणी चाहिये तो मुझे बता, मैं चटणी बना दूंगी । तुझे दौल्या की चटणी नहीं खानी चाहिये ।

फिर दौल्या का स्कूल जाना बंद हो गया। मैं अकेला ही स्कूल जाने लगा। बापू ने मेरे लिए एक साइकिल भी खरीद दी थी। तब साइकिल को देखने के लिए समूचा गांव इकट्ठा हो गया था । मैं साइकिल पर बैठना सीख रहा था। कोंड्या मुझे साइकिल चलाना सिखाता था। मैं साइकिल चलाता और कोंड्या को चेतावनी दे रखी थी कि अगर मैं साइकिल से गिरा तो कोंड्या को दादाजी के हाथों जूतों की मार खानी पडेगी। इसलिए कोंड्या को मेरी बड़ी फिक्र रहा करती थी ।

कोंडया के थक जाने के बाद उसकी जोरू केरा साईकिल कि पीछे पीछे दौड़ती। वह बार-बार चिल्लाती , साइकिल धीरे चलाइये मालिक, नहीं तो गिर जायेंगे, सामने ढलान है जी।'' मगर मैं साइकिल दौड़ाने में मशगूल रहता था । एक बार साइकिल ढलान पर उतर रही थी । ब्रेक दबाने का ध्यान नही रहा । साइकिल दौडने लगी, कोंड्या दौड़ता हुआ आया । जानवरों को रोकना वह जानता था - है हो हो कहता रहा। साइकिल जानवर थोड़े ही थी जो रुक जाती । लिहाजा साइकिल और मैं दोनों जाकर गड्ढे में गिर पडे । मुझे चौट लगी थी। केरा ने मुझे आहिस्ता से उठाया और अपनी धोती से मेरा शरीर पोंछ दिया ।उस समय केरा महारन में मुझे अपनी मां के दर्शन हुए थे ।

फसल का हंगामा था, ज्वार की फसल तैयार होने को थी। बालों में दाने भर गये थे । केरा खेत में पक्षियों को भगाने का काम कर रही थी । दौल्या भी अब हमारे खेत में काम करने लगा था। खेतों में पंछियों के झुंड के झुंड आ रहे थे । ढेलबांस खेतों की रखवाली हो रही थी । फसल झूम रही थी । मैं साइकिल पर सवार होकर खेत की ओर निकल पड़ा। इतवार का दिन था । बापू तहसील गये थे इसलिए दादाजी ने मुझे भेजा था । खेत में दस मजदूर काम कर रहे थे ।

मैं खेत की मेड से होता हुआ चला जा रहा था । एक कोने में मुझे कुछ औरतें छिपती हुई दिखाई दीं । मैने साइकिल रख दी और उधर दौडा । दो महार औरतें खेत में घुसकर फसल की कलंगियां तोड़ रही थीं उनके कपड़ों में कलंगियों का ढेर दिखाई दे रहा था । मुझे देखकर वे सहम गयीं । मैंने उनके झोंटे पकडे और पीटने लगा । वे गिडगिडाने लगीं । उनमें से एक तो खासी जवान थी । मैं उन दोनों को घर ले जाकर दादाजी के सामने पेश करने वाला था। लेकिन वे मेरे पैर छूने लगीं तो मैने रहम खाकर उन्हें छोड़ दिया।

बाद में फसल काटने के समय वही औरतें फिर दिखायी दीं। फसल काटने का ठेका उन्होंने ही लिया था । मुझे देखकर वे मुस्कुराने लगती थीं । मैं भी अपनी हंसी रोक नहीं पाता था। लगता था, इनको एक बार फिर पीटना चाहिये।

जानवरों के गोठ के पास कोंड्या महार का कमरा था। वह वहीं सोता। हमारे घर की रखवाली की जिम्मेदारी उस पर और मोतिया कुत्ते पर थी । दोनों ही ईमानदार थे, जिस घर का अन्न खाया है उस घर के प्रति निष्ठावान । कोंड्या हमारे घर का नौक़र था मगर महारों का पंच था । हर साल वह बापू से अंबेडकर जयंती का चंदा मांग ले जाता था । हमारे गांव के महार अंबेडकर जयंती भी मनाते थे । और मरे हुए जानवरों को भी खींच ले जाते थे । मैंने एक बार उनसे इसका कारण पूछा तो जबाव मिला - ''हमें बाबा साहब भी चाहिये और गांव भी चाहिये । घर में बुद्ध आ गया तो क्या सिर पर देवी माता की डाली ढोने वाली परंपरा को छोड़

दें ? हम तो दोनों की भक्ति करेंगे । आखिर डाली और लाठी ही तो महार की जिंदगी है न ?''

इस वर्ष हमारा मतदार संघ आरक्षित घोषित हुआ था। बापू पंद्रह साल तक विधायक पद भोग चुके थे । बापू ने तय किया कि इस बार कोड्या को चुनाव में जितायेंगे । राजनीति में बापू के शब्दों का सम्मान किया जाता था और पांच गांव के लोग दादाजी को भगवान की तरह मानते थे । बापू अगर कह देते कि गधे का चुनाव होना चाहिये तो लोग गधे को ही मत देते । बापू ने कोंड्या को चुनवाने का निश्चय कर लिया था । कोंडया हां में हां मिलाने वाला महार था, नौक़र था ।

कोंड्या बापू के पैर दबा रहा था । बापू उसे चुनाव के बारे में कुछ समझा रहे थे । उसके लिए वे पैसा खर्च करने वाले थे कोंड्या महार ''जी अण्णा, जी अण्णा'' कहते हुए उनकी हां में हां मिला रहा था बापू ने कोंड्या का आवेदन पत्र भर देने की बात निश्चित कर ली । और फिर कोंड्या जानवरों का गोबर साफ करने के लिए निकल गया।

उस दिन मैं, मेरा बापू, कोंड्या और दादाजी, सब चुनाव का फार्म भरने के लिए तहसील जाने को निकले । बापू ने जीप बाहर निकाली । पूरी तहसील में दो लोगों के पास ही जीप थी । एक हमारे पास और दूसरी रियासत के भूतपूर्व राजा के पास । हम लोग अक्कलकोट पहुंचे । वहां जाकर पहले स्वामी महाराज के दर्शन किये, आशीर्वाद ग्रहण किया और फिर चुनाव का फार्म भर दिया। मिठाई बांटी गई । अपने घर का महार विधानसभा में जायेगा, इस बात की दादाजी को कितनी खुशी थी ।

फिर पता चला कि दौल्या ने भी चुनाव का फार्म भर रखा है। शादी के बाद से वह अपने ससुर के साथ अक्कलकोट में ही रहने लगा था । उसका ससुर रिपब्लिकन पार्टी का नेता था । उसकी लकड़ी की टाल थी । पिछले दस वर्षों से दौल्या घरजमाई बनकर उसके पास ही रहा रहा था। दौल्या के दो बच्चे भी थे, इस बात का पता चलते ही, कि दौल्या ने भी फार्म भरा है, दादाजी गुस्से से भडक उठे । उनकी नजरों में दौल्या को मस्ती चढ गयी थी ।

दादाजी स्वयं दौल्या के पास गये और उससे आवेदन वापस लेने के लिए कहा। मैं भी दादाजी के साथ गया था। हमने उससे कहा कि पचास हजार लेकर आवेदन वापस ले ले । मगर बहुत समझाने बुझाने पर भी वह मानने को तैयार नहीं हुआ । आज तक कभी ऐसा नहीं हुआ था कि किसी ने दादाजी की बात को टाला हो, इसलिए उनसे यह बात सहन नहीं हुई । रात को दादाजी ने कोंड्या और केरा को हंटर से मारा । बापू बीच में पड़ गये थे, इसलिए मामला वहीं ठंडा हो गया ।

दादाजी ने अब जिद पकड ली । दौल्या का गांव में प्रवेश बंद था । फिर भी वह पांच पच्चीस जवानों का झुंड लेकर हमारे गांव में आया है । यह खबर मिलते ही दादाजी चीखते चिल्लाते हवेली से बाहर निकल पड़े । फौरन पूरा गांव इकट्ठा हो गया। और हम सब महारबाडे की तरफ झपटे। दौल्या की सभा तितर बितर हो गयी । दो चार झोंपडियां जलने लगीं । विलाप का स्वर आकाश को छूने लगा। हाहाकार मच गया । मैं भी बेभान हो गया था, जो भी दिखायी दिया, उसी की चमडी हंटर से उधेडने लगा। औरतों बच्चों को भी मैंने नहीं बख्शा । दादाजी चबूतरे पर थे और हमने हुडदंग मचा रखा था । मगर दौल्या किसी तरह सही सलामत छूटकर गांव में बाहर भाग गया था। किसी ने हमको उसकी खबर दी ओर हम दौल्या का पीछा करने लगे । हम सब अब उसे पकडने की जिद में पागल हो गये थे । दौल्या आगे आगे भागा हम उसके पीछे-पीछे थे - खरगोश और शिकारी कुत्तों की दौड़ चल रही थी ।

दौल्या जान बचाकर खेतों, मैदानों से होता हुआ भाग रहा था, हम लोग हाथों में लाठियां, कुल्हाड़ियों वगैरह लिये उसका पीछा कर रहे थे । सब लोग जोर जोर से आवाजें लगा रहे थे। दौल्या बदहवास हो जान बचाने के लिए भाग रहा था। हम वहशी बन गये थे । अंदाप्पा के कुएं के पास दौल्या गिर पडा । उसी जगह पर जहां हम दोनों खाना खाते थे, मुझे उसकी चटणी अच्छी लगती थी। जब तक मैं दौल्या के पास पहुंचता, उस पर कई वार पड चुके थे । वह पूरा खून से सन गया था । उसका जिस्म तडप रहाथा । हाथ पांव कांप रहे थे । लेकिन दौल्या की नजर मुझ पर नाग की तरह गड गयी थी। पहले भी जब कभी दौल्या के साथ मेरा झगड़ा होता था, तब दौल्या मेरी और ऐसी ही नजर से देखा करता था ।

आज पांच छ वर्ष बाद जब हम कोर्ट से बाहर आ रहे हैं, मेरे मन से ये सारी यादें हटने का नाम नहीं ले रही हैं । मन को जकडकर बैठ गयी हैं । दादाजी कोर्ट के बाहर मिठाई लेकर खडे हैं । हम बाइज्जत बरी हो गये हैं। दादाजी ने जज साहब की बंद मुट्ठी दी थी। तब मुझे पैसे को ठुकराने वाला दौल्या याद आ गया था। हम कोर्ट के बाहर चले आये। मैं , बापू और विधायक कोंडिया कांबले की जीप में बैठ गये । दादाजी मिठाई बांट रहे थे।

कोर्ट से बाहर निकलते वक्त मैंने दौल्या की बीवी की ओर देखा । उसकी दृष्टि में मुझे दौल्या की नजर दिखायी दी । वह नजर अब भी मेरा पीछा कर रही हैं । मैं भाग रहा हूं और हजारों जहरीले काले नाग मुझे डंसने के लिए मेरा पीछा कर रहे हैं । इस कोर्ट की दीवारों ने कितने नागों को दंतविहीन कर दिया होगा ? ◆